भगवान भरोसे

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग १२ सम्पादक – किशोरलाल मशरूवाला अंक ५

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ४ अप्रैल, १९४८

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

हिम्मतभरा निर्णय

बड़े दुःखी मनसे हमने 'हरिजन'के प्रकाशनको मुल्तवी करनेकी बात मंजूर की थी। गांधीजीके अवसानके बाद अुस पत्रको बन्द करनेका निर्णय आसान नहीं था, जो बरसोंसे अुनके विचारोंका वाहन रहा और जिसके जरिये अुन्होंने सत्य, प्रेम और अहिंसाके अपने अनोखे सन्देशका लगातार प्रचार किया था। लेकिन 'हरिजन'के कालमोंमें अुस समय जो कारण बताये गये थे, अुनकी वजहसे अिसके सिवा दूसरा कोअी चारा नहीं था कि पत्रका प्रकाशन कुछ दिनोंके लिअे बन्द कर दिया जाता और अन्तिम निर्णय वर्धामें मिलनेवाली रचनात्मक कार्यकर्ताओंकी कान्फरेन्सपर छोड़ दिया जाता। अुस कान्फरेन्समें यह तय किया गया कि जिन लोगोंने गांधीजीसे प्रेरणा पाअी है और जो अुनके आदर्शोंको मानते हैं, वे सब "सर्वोदय समाज"के रूपमें अेकत्रित हों और अेक साथ मिलकर अुन आदर्शोंकी नुमाअिन्दगी करनेकी कोशिश करें, जिनके गांधीजी प्रतीक थे। 'हरिजन' साप्ताहिकोंका पुनः प्रकाशन अुस निर्णयका स्वाभाविक परिणाम है। दुनियाके सारे हिस्सोंसे गांधीजी और अुनके आदर्शोंके प्रशंसक और हमदर्द लोगोंने बेशुमार बिनतियाँ की हैं कि अुन्हें हिन्दुस्तानमें चलनेवाले गांधीजीके विभिन्न कार्योंके सम्पर्कमें रखा जाय। अुन सबकी अिस स्वाभाविक अिच्छाको न मानकर अुन्हें निराश करना ठीक न होता। दुनियाको यह जाननेका हक है कि गांधीजीके देशवासी और खासकर अुनकी श्रद्धा और आदर्शोंको माननेवाले लोग अुस जिम्मेदारीको कैसे निभाते हैं, जो गांधीजीके अवसानके बाद अुनपर आ गअी है। अिस क्षेत्रमें काम करनेवाले लोगोंके लिअे भी अेक अैसे वाहनकी जरूरत है, जिसके जरिये वे अपने प्रयत्नोंमें सम्पर्क कायम कर सकें और अपने अपने विचारों और अनुभवोंका लेन-देन कर सकें। फिरसे प्रकाशित होनेवाले 'हरिजन' साप्ताहिक जिस तरह हमारे प्रयत्नोंके अुसी तरह हमारी कमियों और असफलताओंके भी दर्पण बनेंगे।

'हरिजन' साप्ताहिकोंका प्रकाशन फिरसे अिसीलिअे संभव हो सका कि श्री किशोरलाल मशरूवालाने स्वास्थ्य खराब होनेके बावजूद 'हरिजन'को अपनी सेवाअें देनेका हिम्मत भरा निर्णय किया। श्री विनोबा भावेकी तरह श्री किशोरलाल मशरूवाला भी सत्यकी खोज करनेवाले हैं, जिन्होंने जीवनभर गांधीजीके आदर्शोंका अध्ययन ही नहीं किया है, बल्कि अुन्हें अपने जीवनमें अुतारनेकी लगातार कोशिश भी की है। अुन्हें अपनी सीमाओं और कमियोंका बहुत ज्यादा खयाल रहता है। ट्रस्टियोंने आम तौरपर अपने देशवासियों और खास तौर पर 'हरिजन' साप्ताहिकोंके पाठकोंकी सद्भावना और सक्रिय सहयोगके भरोसेपर ही 'हरिजन' साप्ताहिकोंका प्रकाशन फिरसे चालू करनेका निर्णय किया है। मुझे विश्वास है कि सबकी सद्भावना और सहयोग काफी मात्रामें अुन्हें मिलेगा।

नअी दिल्ली, ३१-३-'४८
(अंग्रेजीसे)

वल्लभभाअी पटेल

पहली जरूरत

['हरिजन'के अिस अंकके लिअे श्री मंगलदास पकवासाने जो सन्देश भेजा है, वह नीचे दिया जाता है — **प्रबन्ध सम्पादक**]

मुझसे कहा गया है कि मैं 'हरिजन'के लिअे अेक सन्देश दूँ। बापूका अेक सामान्य अनुयायी क्या सन्देश दे सकता है? अिसमें मुझे जरा भी शक नहीं है कि बापूकी फिलासफीमें अन्तर्बाह्य भीगे हुअे योग्य व्यक्तियोंकी रहनुमाअीमें फिरसे शुरू होनेवाला 'हरिजन' का प्रकाशन आजकी सबसे पहली जरूरतको पूरी करता रहेगा। दुनिया आज सम्पत्तिकी बरबादी और मानव जातिको नेस्त नाबूद करनेवाले अेक नये युद्धके किनारेपर खड़ी है। यह बात करीब करीब नामुमकिन मालूम होती है कि दुनियाकी ताकतें गांधीजीके सत्य और अहिंसाके अुसूलोंको अपनायेंगी और युद्धका हमेशाके लिअे शपथपूर्वक त्याग कर देंगी। लेकिन कम-से-कम अेशियाके अिस अुपखंडके लोगोंको तो अलग अलग धर्मों, वर्गों और जातियोंके बीच भ्रातृप्रेम, शान्ति और सद्भावना रखनेके गांधीजीके सन्देशपर ध्यान देना ही चाहिये। बापूने अेकताके लिअे जबर्दस्त कोशिश की थी। अिसलिअे कोअी भी व्यक्ति अैसा काम न करे, जिससे हमारे लोगोंमें फूट या आपसी विरोध पैदा हो। भगवान हमारे देशवासियोंको वह बुद्धि और ताकत दे कि वे बापूके बताये हुअे रास्तेपर चल सकें। अगरचे शान्तिके अुस पैगम्बरका सन्देश सारी दुनियाके लिअे था, फिर भी हर हालतमें हमें यह साबित करना है कि हम अुनकी मीरासके काबिल हैं।

नागपुर, २७-३-'४८
(अंग्रेजीसे)

मंगलदास पकवासा

अल्पसंख्यक जातियोंके बारेमें नीति

अखबारोंमें हिन्दुस्तान और पाकिस्तानकी सरकारोंका नीचे दिया हुआ अेक सम्मिलित बयान प्रकाशित हुआ है :

"हिन्दुस्तान और पाकिस्तानके प्रधान मंत्रियोंके ता० १९ मार्चको अेक दूसरेसे मिलनेका जो प्रसंग आया, अुसका फायदा अुठाकर वे अपने-राज्यमें रहनेवाली अल्पसंख्यक जातियोंके बारेमें अपनी नीतिको सादी और साफ भाषामें फिरसे जाहिर करते हैं। दोनों सरकारोंको सिर्फ आशा ही नहीं, बल्कि अिस बातकी अुत्सुकता है कि अल्पसंख्यक जातियाँ अपने अपने मूल वतनोंमें ही रहें। वे अुनके रहनेमें पूरी पूरी मदद करना चाहती हैं। अुनका यह विश्वास हो गया है कि अैसा करनेमें ही सबका हित है।

"अलबत्ता, अिसका मतलब यह नहीं है कि जो अपनी मर्जीसे अेक राज्यको छोड़कर दूसरे राज्यमें जाना चाहते हैं, अुनके रास्तेमें वे किसी किस्मकी अड़चनें खड़ी करना चाहती हैं।"

यह निवेदन अच्छा है। मगर जो अल्पसंख्यक जातियाँ अिसमें फँसी हुअी हैं, अुन्हें अिसपर विश्वास तो तभी हो सकता है, जब सरकारी

www.vinoba.in

अधिकारी अिस नीतिपर वफादारीसे अमल करें, नजदीक रहनेवाली बहुसंख्यक जातियाँ दिलसे अुनका साथ दें और अल्पसंख्यक जातियोंके नेता और सलाहकार भी, जिस राज्यमें वे रहते हों, अुसके प्रति साफ दिल रखें। यह तभी हो सकता है, जब सभी लोग राजकीय सत्ता या लोभके बदले अीश्वरको गवाह रखकर काम करें।

वर्धा, २५-३-'४८

(गुजरातीसे) **किशोरलाल घ० मशरूवाला**

सेवाग्राम-सम्मेलनके ठहराव

[सेवाग्राममें १३, १४ और १५ मार्च, १९४८को रचनात्मक कार्यकर्ताओंकी जो कान्फरेन्स मिली, अुसने नीचेके छः ठहराव पास किये थे। कांग्रेस-प्रेसिडेण्ट डॉ० राजेन्द्रप्रसाद कान्फरेन्सके अध्यक्ष थे।

—प्रबन्ध सम्पादक]

१. गांधीजीका देहावसान

३० जनवरी, १९४८की शामको नअी दिल्लीमें सभी रचनात्मक संघोंके प्राणस्वरूप पूज्य गांधीजीका देहावसान होनेसे रचनात्मक संघोंकी जो हानि हुअी है, अुसे शब्दोंमें व्यक्त करना असंभव है। जिस व्यक्तिने अुनके प्राण लेनेका दुष्कृत्य किया अुसने तथा जो लोग अुसके पीछे होंगे अुन्होंने, न सिर्फ हमारे देशका बल्कि सारी मानव-जातिका जो द्रोह और नुकसान किया है तथा हिन्दू धर्म और संस्कृतिपर जो बड़ा कलंक लगाया है, अुसका कोअी नाप नहीं निकाला जा सकता। सब विचारशील लोगोंके लिअे यह सोचनेकी बात है कि जगतके सबसे श्रेष्ठ और पवित्र पुरुष, जो मनुष्यमात्रका मित्र और अपने देश-जनोंका पिता थे, जो निर्भयता और विश्वासके साथ लोगोंके बीच फिरा करते थे, महात्माको भी गोलीका शिकार बनानेकी हद तक तामस बुद्धिका मनुष्यमें पैदा होना संकुचित साम्प्रदायिक वृत्ति बढ़ानेवाले और मानव-मानवके बीच भेदभाव तथा द्वेष अुत्पन्न करनेवाले कुसंस्कारों और बुरी तालीमका परिणाम है।

मानव-जातिपर लगे हुअे अिस धब्बेको और अुससे हुअे नुकसानको तथा गांधीजीके परिवारके व्यक्तियोंके समान बने हुअे हमारे जैसे सब लोगोंके दुःखको किसी प्रस्तावसे नहीं मिटाया जा सकता। अुसे मिटानेका अेकमात्र मार्ग है, विवेकके साथ गांधीजीके सिखाये हुअे सिद्धान्तों और आदर्शोंपर चलनेके लिअे जनताकी मनोवृत्ति तैयार करना, अुनके रचनात्मक कामोंको लोकप्रिय बनाना, सब देशों, धर्मों और जातियोंमें मित्रभाव, सहयोग और सहायवृत्ति बढ़ाना तथा जगतसे नरहत्या, अत्याचार, युद्ध आदि हिंसक साधनोंका त्याग कराना।

गांधीजीके लिअे आदर और भक्ति रखनेवाले तथा अुनके सिद्धान्तोंके अनुसार राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि क्षेत्रोंमें काम करनेवाले सब कार्यकर्ताओंसे और जनतासे अिस सम्मेलनका अनुरोध है कि हम अिसी बातका चिंतन करें, परस्पर विचार-परामर्श करें और संकल्प करें कि आअिन्दा हम अुनके कामोंको किस तरह आगे बढ़ा सकेंगे और अुनका "मिशन" पूरा कर सकेंगे।

२. सर्वोदय-समाज

निश्चय हुआ कि:

गांधीजीके अुसूलोंको माननेवालोंका अेक भाअीचारा कायम हो, जिसे अेक फैले हुअे संगठनकी शकल दी जाय।

१. नाम:— अिस संगठनका नाम सर्वोदय-समाज होगा।

२. अुद्देश (अिरादा):— सत्य और अहिंसापर अेक अैसा समाज बनानेकी कोशिश करना जिसमें जातपाँत न हो, जिससे किसीको शोषण करनेका मौका न मिले और जिससे समूह और व्यक्ति दोनोंका पूरा पूरा (सर्वांगीण) विकास करनेका पूरा अवसर मिले।

३. साधन (जरिये):— अिस अिरादेको पूरा करनेके लिअे नीचे लिखे साधन (जरिये) काममें लाये जायँ:

१. साम्प्रदायिक अेकता (अलग अलग मजहबोंको माननेवालोंमें और जमात-जमातमें मेल।)

२. अस्पृश्यता-निवारण (छुआछूत न मानना)

३. जातिभेद-निराकरण (जातपाँत मिटाना)

४. नशाबंदी

५. खादी और दूसरे ग्रामोद्योग (दस्तकारियाँ)

६. गाँव-सफाअी

७. नअी तालीम

८. स्त्रियोंके लिअे पुरुषोंके बराबरीके हक और समाजमें स्त्री-पुरुषकी बराबरीकी प्रतिष्ठा।

९. आरोग्य और स्वच्छता

१०. देशकी भाषाओंका विकास

११. प्रान्तीय संकीर्णताका निवारण

१२. हिन्दुस्तानीका राष्ट्रभाषाके तौरपर प्रचार

१३. आर्थिक समानता

१४. खेतीकी तरक्की

१५. मजदूर संगठन

१६. आदिम जातियोंकी सेवा

१७. विद्यार्थी-संगठन

१८. कुष्ठ रोगियोंकी सेवा

१९. संकट-निवारण और दुःखियोंकी सेवा

२०. गोसेवा

२१. प्राकृतिक चिकित्सा (कुदरती अिलाज)

२२. अिसी तरहके दूसरे काम

४. सेवकोंका रजिस्टर:— जो कोअी अूपर लिखे हुअे अुसूलों तथा साधनोंको मानता है और अुनके मुताबिक काम करनेकी कोशिश करता है, वह सेवक अिस समाजमें शामिल हो सकेगा। वह सर्वोदय समाजके मंत्रीको अित्तला दे कि अुसे समाजके अुसूल और साधन मंजूर हैं, और अपना नाम और पता भेज दे। अैसे सेवकका नाम और पता समाजके रजिस्टरमें दर्ज किया जायगा।

५. सालाना मेला:— सेवकोंका आपसमें संपर्क (ताल्लुक) रखनेके लिअे हर साल अेक मुकर्रर जगहपर ३० जनवरीके दिन मेला लगा करे, जिसमें सब सेवक शामिल हो सकेंगे।

६. स्वरूप:— अिस समाजकी सूरत सलाह देनेवाली संस्थाकी होगी, हुकूमत करनेवाली संस्थाकी नहीं।

७. व्यवस्था:— यह सम्मेलन सभापति और श्री० किशोरलाल मशरूवालाको यह अधिकार देता है कि वे दोनों मिलकर अेक समिति मुकर्रर करें, जो "सर्वोदय समाज"का काम चलावे तथा बढ़ावे। समितिके सदस्योंकी संख्या वे ही निश्चित करें।

नोट— अूपर बताये हुअे अधिकारके अनुसार सभापति श्री राजेन्द्रप्रसाद और श्री किशोरलाल मशरूवालाने नीचे लिखे सेवकोंकी कार्य-समिति जाहिर की है:

१ श्री र० श्री० धोत्रे — संयोजक
२ ,, सुशीला बहन पै
३ ,, धीरेन्द्र मजुमदार
४ ,, म० सत्यनारायण
५ ,, रामदेव ठाकुर
६ ,, वेदरत्नम् पिल्ले
७ ,, मनमोहन चौधरी
८ ,, टिम्मप्पा नायक
९ ,, बबलभाअी महेता
१० ,, महेशदत्त मिश्र
११ ,, काशिनाथ त्रिवेदी
१२ ,, श्रीमन्नारायण अग्रवाल

www.vinoba.in

अिस समितिको पाँच तक और भी सेवक अपनी समितिमें जोड़नेका अधिकार रहेगा। अिस समितिका काम है — समाजके सेवकोंका रजिस्टर रखना, ३० जनवरीका मेला भरनेकी जगह मुकर्रर करना, अुसके लिअे जरूरी प्रबन्ध करना, आम तौरपर समाज और सेवकोंका परस्पर संयोजन करना तथा सर्वोदय समाजके बारेमें सम्मेलनमें पास हुअे प्रस्तावोंको सफल करना। समितिका कोअी स्थान खाली होनेपर अुसे भर देने और जरूरत हो, तो पदाधिकारी नियुक्त करनेका भी अुसे अधिकार है।

३. रचनात्मक संस्थाओंका मेल

अिस सम्मेलनकी सिफारिश है कि मौजूदा रचनात्मक संस्थाअें आपसमें मेल करनेकी अेक योजना बना लें और अेक सम्मिलित समिति या मिलापी कमेटी कायम करें। यह काम जितनी जल्दी हो सके, पूरा किया जाय।

श्री० जे० सी० कुमारप्पासे सम्मेलनकी प्रार्थना है कि वे अिस सम्बन्धमें अुचित कार्रवाअी करें।

४. केन्द्रोंकी स्थापना

प्रस्ताव नं० ३ के अनुसार होनेवाली सम्मिलित समितिसे और बापूजीके विचारोंमें भरोसा रखनेवाले सेवकोंसे अिस सम्मेलनकी सिफारिश है कि श्री० कुमारप्पाकी तजवीजके मुताबिक रचनात्मक काम चलानेके लिअे छोटे छोटे केन्द्र जगह जगहपर कायम करें।

५. साम्प्रदायिक समस्या

रचनात्मक काम करनेवालोंका यह सम्मेलन निहायत दुःखके साथ अुस मानसिक हवाको देखता है, जो देशमें फैल गअी है। फिरकेवाराना नफरत और अपने मकसदको हासिल करनेके लिअे अच्छे-बुरे साधनोंमें फरक न करनेकी मनोवृत्ति आगकी तरह फैल रही है और देशका भविष्य अुसकी वजहसे खतरेमें पड़ रहा है। यह सम्मेलन हर हिन्दुस्तानीसे पूरे जोरके साथ अपील करता है कि वह अिस आगको बुझानेका अपना पहला कौमी फ़र्ज़ समझे और अपनी सारी शक्ति अिस काममें खपा दे, ताकि अिस देशके रहनेवाले फिरकेवाराना नफरतसे मुक्त हो जायँ और निश्चय कर लें कि हर मकसदको पूरा करनेके लिअे साधनोंको खरा और साफ रखना जरूरी है, यानी हर हालतमें सत्य और अहिंसाके अुसूलोंको पूरी तरह पाला जावे।

यह सम्मेलन सब रचनात्मक संस्थाओंसे प्रार्थना करता है कि वे अपने सब काम करनेवालोंको हिदायत करें कि मुल्ककी मौजूदा हालतमें वे अपना पहला फ़र्ज़ अूपर लिखे जहरको मिटाना और अूपरके अुसूलोंको फैलाना समझें।

अिस सिलसिलेमें यह जरूरी है कि जहाँ तक बन पड़े, कांग्रेस और सरकारके सहयोगसे हर रचनात्मक संस्था और रचनात्मक काम करनेवाला हिन्दुस्तानभरके अंदर सब मजहबोंके शरणार्थियोंको फिरसे बसाने और अुनकी आर्थिक और मानसिक हालत दुरुस्त करनेके लिअे पूरी मदद करे और कोशिश करे कि हर जगह सब अलग अलग मजहबोंके लोग अपने जान, माल, अिज्जत और मजहबोंको पूरी तरह सुरक्षित समझते हुअे फिरसे अमन-चैन, प्रेम और अेक दूसरेके साथ मेल-मिलापसे रह सकें।

६. शान्ति-सेवादल

पू० बापूजीके बलिदानका असली कारण देशमें फैली तंग जातीयता है, जिसे दूर किये बिना हम हिन्दके माथेपरसे कलंकका टीका न मिटा सकेंगे।

अिस अहम कामको पूरा करनेके लिअे यह बहुत जरूरी है कि देशकी जनताको, खासकर नौजवानोंको, बिना किसी जातीय भेदभावके सत्य, अहिंसा और सदाचारकी बुनियादपर संगठित किया जाय। यह संगठन अेक "शांति-सेवादल" के रूपमें हो, जो देशमें कौमी अेकताका वातावरण पैदा करे, दंगोंमें पीड़ितोंकी सेवा करे, शरणार्थियोंको जरूरी मदद पहुँचावे और शहरों और देहातोंमें भजन-मंडलियाँ कायम करे।

www.vinoba.in

प्रेम-पन्थ

[नीचेके हिस्से बापूके लेखोंमेंसे चुने गये हैं। अुनके प्रकाशित होनेके साल विक्रम संवतमें दिये गये हैं। —वा० गो० देसाअी]

१
मृत्यु और अमरता

(क)

मौत किसी भी समय आवे, तो भी वह कल्याणकारी है। लेकिन जो अपने धर्म यानी सत्यके लिअे मरता है, अुस वीर पुरुषका वह दुगुना कल्याण करती है। मौत कोअी राक्षस नहीं है; वह सबसे सच्ची दोस्त है। वह हमें दुःख और यातनासे छुटकारा दिलाती है। वह हममें रही हुअी आसुरी सम्पत्तिके सामने हमारी मदद करती है। वह हमें नित नया मौका और नअी आशा देती है। मीठी नींदकी तरह वह हमारी थकावट दूर करती है। फिर भी कोअी दोस्त मर जाता है, तो अुसके लिअे शोक मनानेका रिवाज है। लेकिन जब कोअी अपने धर्म या सिद्धान्तके लिअे अपने प्राणोंकी बलि देता है, तब अुसके बारेमें शोक मनाना बुरी बात है। (१९८३)

(ख)

भगवान यह जानता है कि मुझसे क्या काम लिया जाय। अुसके कामके लिअे जब तक अुसे मेरी जरूरत होगी, अुससे ज्यादा अेक पल भी वह मुझे जीने नहीं देगा। (१९९४)

(ग)

जन्म और जीवन धीमे और चालू विकासकी तरह हैं, और सनातन सत्यरूप मृत्यु काया-पलटकी तरह है। जीवनकी तरह मृत्यु भी आदमीकी तरक्कीके लिअे जरूरी है। (१९७८)

(घ)

मृत्यु जब आवे, तब यह विचार हमें कितनी सान्त्वना पहुँचाता है कि वह कुदरतकी व्यवस्थामें चतुराअी भरी योजना है? अगर मानव-जन्मका यह नियम हम समझ लें और दुःखदर्दसे छुटकारा दिलानेवाले दोस्तके रूपमें मृत्युका स्वागत करनेके लिअे तैयार रहें, तो हम जीवनकी पागलपन भरी झंझटोंमें न पड़ेंगे, और दया-धर्मको छोड़कर और दूसरे जीवोंको मार कर जीनेकी अिच्छा नहीं रखेंगे। (१९८३)

(ङ)

जीवन और मरण अेक ही चीज़के दो रूप हैं, अेक ही सिक्केके दो पहलू हैं। दरअसल मुझे दुःख और मौत सुख और जीवनसे ज्यादा समृद्ध जान पड़ते हैं। दुःख और वेदनाके बिना जिन्दगीमें क्या सार है? . . . रामायणमें सीता और रामके दुःख वेदना और तपके सिवा दूसरा क्या है? . . . मैं चाहता हूँ कि आप लोग जीवनके बजाय मौत और दुःखकी ज्यादा कीमत आँकें और अुसे अपने मनका मैल धोनेवाली अेक शक्ति समझें। (१९८६)

(च)

मैंने प्रगति की है, यह भावना मुझे आशासे भर देती है। मगर आशा पूरी होनेसे पहले मेरा देह छूट जाय, तो मैं यह नहीं सोचूँगा कि मैं असफल हो गया हूँ। क्योंकि मैं पुनर्जन्मको अुतनी ही हद तक मानता हूँ, जितनी हद तक अपने मौजूदा शरीरके अस्तित्वको मानता हूँ। अिसलिअे मैं जानता हूँ कि थोड़ी कोशिश भी बेकार नहीं जाती।

(छ)

मैं मानता हूँ कि आत्मा अमर है। अिसके लिअे मैं आपको समुद्रका अुदाहरण देता हूँ। समुद्र पानीकी बूँदोंसे बना है; हरअेक बूँद अलग अलग होती है, फिर भी वह पूरे समुद्रका हिस्सा है। अिस तरह समुद्र 'अेक और अनेक' दोनों है। जीवनके अिस समुद्रमें हम सब छोटी छोटी बूँदोंकी तरह हैं। मेरे सिद्धान्तका मतलब यह है कि मुझे जीवनके साथ, हरअेक जीवके साथ अेक रूप हो जाना चाहिये; और चूँकि भगवान घटघटमें समाया हुआ है, अिसलिअे मुझे अपने आपमें जीवनकी भव्यताका अनुभव करना चाहिये। जीव-मात्रके संघको ही भगवान कहते हैं। (१९८५)

(अंग्रेजीसे)

हरिजनसेवक

४ अप्रैल १९४८

भगवान भरोसे

मैं भगवान भरोसे 'हरिजन' पत्रोंके सम्पादनका भार अपने सिर अुठा रहा हूँ। यह मैं सिर्फ नम्रताकी भाषा नहीं बरत रहा। व्यवहार बुद्धिसे देखें, तो मैं यह अेक बड़ा साहस कर रहा हूँ। मेरी ताकत भर लेख लिखना और सम्पादनकी जिम्मेदारी अुठाना अिन दोमें बड़ा फर्क है। लेकिन प्यारेलालजी संकटमें पड़े हुअे लोगोंके कामोंमें लगे हुअे हैं। यह काम वे छोड़ नहीं सकते। पूज्य गांधीजीके हैयातमें सम्पादकके रूपमें अपना नाम रखकर भी अुसकी जिम्मेदारीसे वे बहुत कुछ मुक्त रह सकते थे। लेकिन अब वैसा नहीं हो सकता। अुनकी नजरसे सब गुजरना चाहिये। दूसरे कामोंको करना और अखबार भी चलाना अुनके लिअे मुश्किल है। अिसलिअे सम्पादकके लिअे दूसरे नाम खोजने पड़े। मुझसे अधिक योग्य व्यक्ति तो बहुत हैं। मगर अेक या दूसरे कारणसे किसीका नाम नहीं रखा जा सका। अिसलिअे आखिरमें मुझे यह कबूल करना पड़ा है।

मैं नहीं जानता कि अिसमें मैं कितना कामयाब हूँगा। बाहरी हालत अच्छी नहीं। सबसे बड़ी मुश्किल मेरी तबीयतकी है। और भी बहुतसी अड़चनें हैं। फिर भी अिस बोझको अुठानेमें दो ही बातें मुझे हिम्मत दे रही हैं। पहली यह कि मेरी सब कमियों और प्रतिकूलताओंके होते हुअे भी मेरे साथियोंका मुझपर प्रेम है और मैं आशा कर सकता हूँ कि वे सब मुझे मदद करेंगे। फिर देशके विविध अग्रसरोंका मुझे आशीर्वाद है, और पाठकोंमें मेरे विचारोंको पसन्द करनेवाला अेक वर्ग है। अितनी ही बात हिम्मत देनेके लिअे काफी हो सकती है। लेकिन अिससे भी ज्यादा बड़ी बात यह है कि अीश्वरके नामसे महान मानव-सेवाका जो काम करते करते गांधीजी खप गअे, वह काम अभी पूरा नहीं हुआ। वह काम मेरी दृष्टिसे सिर्फ राजकीय, आर्थिक या सामाजिक नहीं, वह मतपंथोंके झगड़े मिटानेका भी नहीं, बल्कि वह हमारे दिलोंमें अीश्वर-निष्ठा — खुदापर अीमान — को फिरसे मजबूत करनेका काम है। सचाअी, अहिंसा, भाअीचारा, संयम, नेक बरताव, अीमानदारी, बड़ों और निर्बलोंके प्रति आदर वगैरा, जो मानव-सभ्यता और संस्कृतिके असली गुण हैं, अिन सबके समूहको यदि अीश्वर नाम दिया जाय, तो कहा जा सकता है कि हम आज अीश्वरसे विमुख — मुँह फेरे हुअे — बने हुअे हैं। अीश्वरकी जगह सिर्फ विद्या, कला और युक्तियोंने ले ली है। ये हमें सुखी नहीं कर सकेंगी। बिना अीश्वरकी तरफ मुँह किये हमारा कोअी सच्चा चारा नहीं। अिस तरह यह काम धर्मकी फिरसे खोज करने और अीश्वरकी तरफ फिरसे कदम बढ़ानेका है। तरह तरहके रचनात्मक — तामीरी — काम अिसके केवल साधन हैं। अिस काममें हाथ बँटाते हुअे अगर मैं घिस गया, तो वह मुझे अपने जीवनकी अच्छी समाप्ति मालूम होगी; और अिसलिअे भगवानके नाम और भरोसेसे मैं यह काम अुठा रहा हूँ। अिसमें मुझे सबके आशीर्वाद और सहयोग चाहिये।

अेक बात पहलेसे ही साफ कर लेना ठीक होगा। कुछ दिन पहले श्री विनोबा भावेने अपने खुदके लिअे जो कहा था, वह मैं अपनेपर भी लागू करता हूँ। गांधीजीसे मैंने बहुत कुछ पाया है। बहुत चीजें दूसरोंसे भी पाअी हैं। मेरे दिल व दिमागमें वे सब अेकरूप हो गअी हैं, और मेरे अपने मानसमें बदल गअी हैं। अिसलिअे मैं जो कुछ कहूँ, वह हमेशा गांधीजीके ही विचार नहीं हो सकते, बल्कि वे सब मेरे ही विचार समझे जाने चाहियें। यदि मैं यह भी कहूँ कि "गांधीजीका यह मत था", और अगर वह गांधीजीके लेखसे ही न निकलता हो, तो अितना ही समझना चाहिये कि मेरी गांधीजीके बारेमें वैसी मान्यता है। जो मेरे बारेमें वही दूसरे लेखकोंके बारेमें भी समझना चाहिये। गांधीजीके अपने शब्दों — और शब्दोंके मानी बड़े लेखोंमेंसे निकाले हुअे कुछ हिस्से ही नहीं बल्कि पूरे लेख — के ही बारेमें कह सकते हैं कि अुस तारीखको गांधीजीके वे विचार थे। हो सकता है कि बादमें अुनके विचारोंमें कुछ फर्क भी हुआ हो, अथवा आज अगर गांधीजी हों तो अपने विचार बदलें भी। अिस तरह विवेकसे लिखनेवाला, पढ़नेवाला और विचार करनेवाला आदमी साम्प्रदायिक (फिरकेवारी) संकुचितता (तंगदिली) से बचेगा और गांधीजीके नामका दुरुपयोग न होने देगा।

वर्धा, २३-३-'४८. **किशोरलाल घ० मशरूवाला**

सेवाग्राम-सम्मेलन

मूल प्रस्ताव

जो लोग अलग अलग तरहके रचनात्मक कामोंमें लगे हुअे हैं, वे कुछ समयसे अेक अैसे सम्मेलनकी जरूरत महसूस कर रहे थे, जहाँ वे अपने विचारों और अनुभवोंका आदान-प्रदान कर सकें और अिस बातपर विचार कर सकें कि नअी परिस्थितिमें वे कैसे अपने कामको अच्छी तरहसे आगे बढ़ा सकते हैं। अिसके अनुसार गांधीजीकी सलाहसे यह तय किया गया था कि फरवरीके प्रारम्भमें वर्धामें सम्मेलन किया जाय। अिसमें गांधीजी भी शामिल होनेवाले थे। सेवाग्राममें सारी तैयारियाँ हो गअी थीं। मगर जब वे दिल्लीसे सेवाग्रामके लिअे रवाना होनेवाले थे, अुसके सिर्फ दो या तीन ही दिन पहले वह दुर्घटना हो गअी और सम्मेलनको मुल्तवी करना पड़ा।

सम्मेलन

गांधीजीके अवसानके बाद यह चीज और भी ज्यादा जरूरी हो गअी। अिसलिअे १३, १४ और १५ मार्चको सम्मेलन हुआ। अुसमें सारे देशके करीब ५०० रचनात्मक कार्यकर्ताओंके अलावा बड़े बड़े लोग भी शामिल हुअे थे। अुनमें केन्द्रीय सरकारके सदस्योंमेंसे पण्डित जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद, श्रीमती राजकुमारी अमृतकुँवर और श्री जयरामदास दौलतराम; मध्यप्रान्त व अुड़ीसाके गवर्नर; बम्बअी, मद्रास और अुड़ीसाके प्रधानमन्त्री और दूसरे कअी प्रान्तोंके बहुतसे मन्त्री थे। अिनके अलावा आचार्य कृपलानी और श्री जयप्रकाश नारायण जैसे नेताओंने भी अुसमें भाग लिया था।

दो समस्याअें

सम्मेलनके सामने दो समस्याअें थीं। गांधीजीने दक्षिण अफ्रीका और हिन्दुस्तानमें लगातार पचास बरस तक काम किया था। वे कुछ अुसूलों और जीवनके अेक खास तरीकेके समर्थक थे। देशकी आजादीकी लड़ाअीमें अुन्होंने राष्ट्रीय ताकतोंका संगठन किया था। जो लड़ाअी वे लड़े, वह अुस किस्मकी नहीं थी, जिससे दुनिया परिचित है। अुसकी विचित्रता अिसमें थी कि वह अेक बड़ी हुकूमतकी भौतिक ताकतके खिलाफ सत्य और अहिंसाके आधारपर लड़ी गअी थी।

अुनकी शिक्षा किसी रहस्यवादी या सन्तकी शिक्षाकी तरह नहीं थी, जो सिर्फ दुनियासे सारा नाता तोड़ लेनेवाले व्यक्तियोंके लिअे ही होती है, बल्कि ज्यादासे ज्यादा व्यवहारमें लाने लायक थी और अुसपर कोअी भी अपने जीवनमें अमल कर सकता था। जो कुछ अुन्होंने कहा या लिखा है, अुसका बहुतसा हिस्सा सम्हालकर रखा गया है, और अुसे हम और हमारे बाद आनेवाली पीढ़ियाँ देख सकती हैं। हिन्दुस्तान और दूसरे देशोंमें भी अैसे कअी लोग हैं, जिन्होंने गांधीजीके सिद्धान्तोंके साँचेमें अपना जीवन ढालनेकी कोशिश की है और जो अैसे कअी तरहके कामोंमें लगे हुअे हैं, जो गांधीजीके दृष्टिकोणके

www.vinoba.in

अनुसार जीवन और समाजकी तरक्कीके लिअे जरूरी और सहायक समझे जाते हैं। अिसलिअे सम्मेलनके सामने खड़ी होनेवाली समस्याओंमेंसे पहली यह थी कि अैसी अेक संस्था कायम करना जरूरी और संभव है या नहीं जो अुनके काम और विचारधाराकी अच्छी तरह सेवा कर सके और अुन्हें चलाये रखे। और अगर अैसी संस्था कायम की जाय, तो अुसका स्वरूप और काम क्या होना चाहिये। दूसरे, गांधीजीने अपने रचनात्मक कामको, अुसके अलग अलग विषयोंसे सम्बन्ध रखनेवाले कअी स्वरूपोंमें, अमलमें लानेके लिअे बहुतसी संस्थाअें कायम की थीं, जो अपना काम आज भी कर रही हैं। अब सवाल यह है कि किस तरह अिन संस्थाओंको जारी रखा जाय, ताकि वे गांधीजी द्वारा अुठाये हुअे कामको आगे बढ़ा सकें।

प्रारम्भिक चर्चा

१३ मार्चको सम्मेलनकी कार्रवाअी शुरू होनेसे पहले बहुतसे कार्यकर्ता, जो गांधीजीके साथ काम कर चुके थे, मिले और समस्याओंके अलग अलग स्वरूपोंपर चर्चा की। अुन्होंने प्रोग्राम बनाया और सम्मेलनके सामने पेश करनेके लिअे प्रस्ताव तैयार किये। ये प्रारम्भिक बैठकें विचारोंको स्पष्ट करने और काम करनेके लिअे अेक व्यावहारिक प्रोग्राम तय करनेकी दृष्टिसे बहुत अहम थीं। जैसी कि आशा की गअी थी, ये चर्चाअें खुली और सम्पूर्ण थीं और जिन लोगोंने अिन बैठकोंमें भाग लिया, अुन्होंने दूसरोंके विचार करनेके लिअे अपने दृष्टिकोण अुनके सामने रखे। पहला सवाल यह था कि हम क्या कर सकते हैं, जिससे गांधीजीकी शिक्षाके अध्ययनको बढ़ावा मिले और लोग अपने जीवनमें अुसपर अमल करें। क्या अिसके लिअे अेक संस्थाका होना जरूरी है? अगर है, तो क्या वह अेक अच्छी तरह संगठित और अनुशासनमें काम करनेवाली संस्था हो, जिसके मेम्बर अुसकी सीमाके अन्दर रहकर काम करें, या वह अैसे मर्दों और औरतोंका अेक समाज भर हो, जिनका गांधीजीके अुसूलोंमें विश्वास है और जिन्होंने अपनी समान श्रद्धा और समान आदर्शोंके सिवा दूसरे किसी बन्धनके बगैर अपने जीवनमें अुनपर अमल करनेकी कोशिश की है?

सन्त और अुनके अनुयायी

अिसमें कठिनाअियाँ और खतरे भी हैं, जिनका मुकाबला करने और टालनेकी जरूरत है। अितिहास अैसे सन्तोंके अुदाहरणोंसे भरा पड़ा है, जिनके अनुयायियोंने अुनके मरनेके बाद अुनकी शिक्षाको जड़ मतोंका रूप दे दिया, जिन्हें अुन सारे लोगोंको स्वीकार करना पड़ा, जो अुनका अनुसरण करते थे। होते होते अिन मतोंमें कोअी अर्थ नहीं रह गया और अुन सन्तोंको माननेवाले लोग सिर्फ अूपरी आडम्बरसे सन्तुष्ट हो गये और अुनके अुपदेशोंकी सच्ची भावनाको अुन्होंने भुला दिया।

गांधीजीका तरीका

सम्मेलनके सदस्य चिन्तित थे कि अैसी कोअी बात गांधीजीकी शिक्षाके बारेमें न होने पाये।

गांधीजीने अपने सार्वजनिक जीवनके कअी वर्षोंमें अपने भाषणों और लेखोंमें सभी विषयोंको समेट लिया था और हमारी मौजूदा जिन्दगीकी अेक भी समस्या अैसी नहीं थी, जिसपर अुन्होंने कुछ कहा न हो। सार्वजनिक जीवनके सवाल ही नहीं, बल्कि व्यक्तिगत जीवनके सवाल भी अुनके सामने लगातार रखे जाते रहे, और अुनका ध्यान खींचते रहे। स्टेटकी बड़ी बड़ी समस्याओंसे लगाकर, जिसे हम गृहस्थजीवनकी बारीकसे बारीक बात समझते हैं, अुसपर भी अुन्होंने अुचित ध्यान दिया। अुदाहरणके लिअे अुन्होंने बताया है कि रसोअीघरको किस तरह जमाया जाय और वहाँ कैसे काम किया जाय, तथा पाखानोंको कैसे साफ रखा जाय। जरा जरासी बारीकियों तक पहुँचनेमें अुन्हें कभी थकावट नहीं मालूम होती थी, और जिस तरह कोअी चीज अुनके लिअे बहुत बड़ी या बहुत मुश्किल नहीं थी, अुसी तरह कोअी चीज बहुत छोटी या बहुत तुच्छ भी नहीं थी। स्वभावसे अुनका सारा जीवन ही प्रयोगोंकी अेक कड़ी थी और अुन्होंने अपनी 'आत्मकथा'को सही अर्थमें 'सत्यके प्रयोग' का नाम दिया था। अैसी हालतोंमें, जैसी कि आशा की जाती है, अुनकी बुद्धि अेक जगह ठहरी रहनेवाली नहीं, बल्कि जीवनके अनुभवके साथ विकास करनेवाली थी। कोअी भी गांधीजीके बारेमें या वे खुद अपने बारेमें यही कह सकते थे कि किसी खास सवालपर अुन्होंने जो कुछ कहा था, वह कहनेके समयका अुनका सोच-विचारकर कायम किया हुआ मत था। वह जरूरी तौरपर अैसा मत नहीं था, जिसे अुसी विषयपर वे दूसरे समय और दूसरी हालतोंमें भी जाहिर करते। यह चीज अैसी नहीं है, जिसे मामूली तौरपर असंगतता कहा जाता है। यह तो अुस आदमीकी विशेषता है, जिसने समय समयपर खड़ी होनेवाली समस्याओंको जाँचने और अुनपर फैसला देनेके लिअे कोअी सिद्धान्त कायम कर लिये हैं, और जो बुनियादी सिद्धान्तसे अेक अिंच भी अिधर अुधर न हटकर अलग अलग समयोंपर अलग अलग मत जाहिर करनेमें डरता नहीं। गांधीजीसे यह विनती की गअी थी कि वे विस्तृत पाठ्य-पुस्तककी तरह अैसी कोअी चीज लिखें, जिसमें वे यह रूपरेखा दे सकें कि हिन्दुस्तान और दुनियाके सामने खड़ी अनेक धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओंको अमली ढंगपर हल करनेमें अुनके सिद्धान्त कैसे काममें लाये जा सकते हैं। लेकिन अैसा करनेमें अुन्होंने अपनी असमर्थता बताअी और कहा कि मेरे पास सिर्फ बुनियादी सिद्धान्त ही हैं, जिन्हें मैं समय समयपर खड़ी होनेवाली अमली समस्याओंपर लागू करता हूँ। मैं सामान्य सिद्धान्तोंकी पाठ्य-पुस्तक जैसी कोअी चीज नहीं लिख सकता। कान्फरेन्सके सदस्योंको यह बात ध्यानमें रखनी होगी, और अिस बातकी सावधानी रखनी होगी कि गांधीजीके अवसानके बाद वे अैसा कोअी काम न करें, जिसे गांधीजी अपने जीवनकालमें करनेसे अिन्कार करते या टालते। यानी वे अुनुदार मतों और नियमोंकी कोअी पाठ्य-पुस्तक नहीं बनायें। लेकिन अिससे ज्यादा यह खयाल भी है कि कोअी संस्था या संघ धीरे धीरे गिरकर सम्प्रदायका रूप ले लेता है; और अिससे हमें हर कीमतपर बचना होगा।

रचनात्मक कार्यक्रम — सत्यपर अमल

जैसा कि अूपर कहा गया है, गांधीजी रहस्यवादी नहीं थे, बल्कि बहुत बड़े व्यावहारिक आदमी थे। और, अुनका अुपदेश था कि जिन सिद्धान्तोंको वे सत्य और पवित्र मानते थे, अुन्हें अमली रूपमें व्यक्तियोंके और अुस समाजके जीवनसे प्रकट होना चाहिये, जिसकी वे कल्पना किया करते थे। अिसलिअे जो रचनात्मक काम अुन्होंने अपने हाथमें लिया था, वह अुनके सत्य और अहिंसाके बुनियादी सिद्धान्तोंका अमली प्रयोग था। थोड़ा ज्यादा गहरा विश्लेषण अुन्हें समन्वयकी तरफ अेक कदम आगे ले गया और अहिंसा सत्यमें समा गअी। सत्य अुनका अेकमात्र बड़ा सिद्धान्त बन गया, जिसपर वे हमेशा दृढ़तासे डटे रहे। गांधीजीने सिर्फ नैतिक अर्थमें ही सत्यको स्वीकार नहीं किया था, बल्कि सत्य अुनका अीश्वर था, जिसमें अुनका सम्पूर्ण अस्तित्व समाया हुआ था। अिसलिअे सत्यके अिस बुनियादी सिद्धान्तसे अलग रचनात्मक कार्यक्रम अुनके लिअे कोअी मानी नहीं रखता था, और अुनका विश्वास था कि जब तक वह सत्यकी नींवपर खड़ा होनेवाला समाज कायम करनेमें मदद नहीं करता, तब तक वह सफल नहीं हो सकता। अिसलिअे गांधीजी रचनात्मक कार्यक्रमकी विभिन्न बातोंको सत्यके महान शिखरकी दिशामें ले जाने और वहाँ तक पहुँचानेवाली सीढ़ियाँ मानते थे। व्यक्तियों और समाजको अुस महान शिखर तक पहुँचना और अुसे हासिल करना था। जिस तरह अलग अलग दिशाओंसे आनेवाले लेकिन अुसी बिन्दुकी ओर जाने और पहाड़की चोटी तक पहुँचानेवाले विभिन्न मार्ग होते हैं, अुसी तरह रचनात्मक कार्यक्रमके अलग अलग विषय भी अेक ही चोटी तक पहुँचानेके साधन माने गये थे।

www.vinoba.in

अिसलिअे गांधीजीका मकसद सिर्फ यह नहीं था कि गहरे विचार और अेकाग्रताके फलस्वरूप बौद्धिक नियंत्रण या दार्शनिक सन्तोष पाया जाय। अुनका मकसद तो अैसे कामोंमें सक्रिय भाग लेना था, जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपसे व्यक्तियों और समाजके जीवनको बनानेवाले हों। अैसा समाज वे अपने रचनात्मक कार्यक्रमके प्रयोग द्वारा कायम करना चाहते थे। अिसीलिअे कान्फरेन्सको यह सोचना है कि गांधीजीके सिद्धान्तोंपर अच्छेसे अच्छे ढंगसे किस तरह अमल किया जा सकता है।

संस्था

गांधीजीका बाहरी आदेशोंपर बहुत विश्वास नहीं था। मनुष्योंके जीवनको नियमित करनेके लिअे वे भीतरी आदेश या सामान्य तौरपर अन्तरात्मा कही जानेवाली शक्तिके आदेशपर ज्यादा निर्भर करते थे। जो लोग गांधीजीकी शिक्षाओंको समझने और अुनपर अमल करनेका दावा करते हैं, वे अगर किसी संस्थाके बाहरी आदेशोंपर निर्भर करेंगे, तो शुरूमें ही अेक तरहसे अपने माने हुअे सिद्धान्तोंसे अिन्कार करेंगे। दूसरी तरफ, अगर अैसे सब लोगोंका, जो गांधीजीके जीवनकालमें अुनके पीछे चलनेकी कोशिश करते थे और जिनके लिअे शरीरधारी गांधीजी ही अेकमात्र बाँधनेवाली ताकत थे, कोअी संघ न हो, तो वे गांधीजीके शरीरके आगमें भस्म हो जानेपर किसी तरहकी जोड़नेवाली ताकतके अभावमें विरोधी विचार-धाराओंके शिकार बन जायँगे। अिसलिअे अिस कान्फरेन्सको बीचका रास्ता लेना पड़ा और अुसने कठोर नियमोंसे न बँधी अेक संस्था कायम करनेका निश्चय किया। अुसमें सब कार्यकर्ताओंको अेक सूत्रमें बाँधनेवाली ताकत होगी, गांधीजीके अुपदेशोंमें अेकसी श्रद्धा और कम-ज्यादा रूपमें जीवनका अेकसा मार्ग, जिसकी अुन्होंने शिक्षा दी थी और जिसके अनुसार हरअेक सेवक अपने क्षेत्रमें जीनेकी कोशिश करेगा।

मेम्बरोंसे अपेक्षा

बहुतसे सवालोंमें से अेक सवाल, जिसपर थोड़ी बहस हुअी, यह था कि क्या अिस संस्थाके सदस्य रहेंगे? और अगर रहेंगे, तो क्या सदस्यताकी कोअी शर्तें रहेंगी? कोअी अिस संस्थाका मेम्बर कैसे बन सकेगा? अेक मत यह था कि मेम्बरोंकी कोअी फेहरिस्त न रहे, क्योंकि अगर मेम्बरोंका नाम रजिस्टरमें दर्ज किया जायगा, तो किसीको यह तय करना पड़ेगा कि कोअी खास अर्जी करनेवाला आदमी मेम्बर बनने लायक है या नहीं। यह भी तय करना होगा कि कोअी खास मेम्बर अपने किसी कामके कारण संस्थाकी सदस्यतासे अलग करने लायक तो नहीं है। दूसरोंका यह खयाल था कि किसी न किसी तरहकी सदस्यता होनी ही चाहिये, फिर अुसका बोझ कितना ही हलका क्यों न हो। आखिरमें यह तय किया गया कि अैसा कोअी भी व्यक्ति अपनेको अिस संस्थाका मेम्बर मान सकता है, जो गांधीजीकी शिक्षाओं और आदर्शोंमें श्रद्धा रखता है और जिसने अपने जीवनमें आजकी या भविष्यमें कायम की जानेवाली रचनात्मक संस्थाओंके कामों जैसे किसी कामको करके गांधीजीके आदर्शों और शिक्षाओंको ठोस रूप देनेकी कोशिश की है। सर्वोदय समाजकी सदस्यता दूसरे संघों और संस्थाओंकी सदस्यताकी तरह नहीं होगी। अेक अर्थमें वह मेम्बरोंके बीच ढीला सम्बन्ध है और दूसरे अर्थमें वह अिस बातपर जोर देता है कि गांधीजीकी शिक्षाओंपर सिर्फ श्रद्धा ही नहीं रखी जाय, बल्कि जीवनमें अुनपर दृढ़तासे अमल भी किया जाय। अिस बातकी जाँच कोअी बाहरी अधिकारी नहीं करेगा। अिसकी जाँच तो किसी स्त्री या पुरुषकी अन्तरात्मा ही करेगी। अिसलिअे जो व्यक्ति अपनेको योग्य समझता है, वह सिर्फ अपना नाम और पता अुस आदमीके पास भेज दे, जो रेकार्डमें रखनेके लिअे अुन्हें पानेका अधिकारी होगा। 'मेम्बर' या 'सदस्य' शब्दको जान-बूझकर छोड़ कर 'सेवक' या 'कार्यकर्ता' शब्दका अिस्तेमाल किया गया है।

नाम

अिसी तरह संस्थाके नाममें भी 'संघ' शब्द, जिसके साथ किसी न किसी तरहके दबावकी भावना जुड़ी होती है, छोड़कर 'समाज' शब्दका अुपयोग किया गया, जिसका मतलब किसी संघके बजाय भाअीचारेका ज्यादा होता है। 'समाज' नामपर भी बहस हुअी और आखिरमें 'सर्वोदय समाज' नाम ही सबसे अच्छा समझा गया। यह नाम अिसलिअे नहीं चुना गया कि खुद गांधीजीने अपनी शिक्षाके ठोस नतीजेको जाहिर करनेके लिअे 'सर्वोदय' शब्दका अिस्तेमाल किया था, बल्कि अिसलिअे भी अुसे चुना गया कि वह सेवकोंके सामने हमेशा गांधीजीकी शिक्षाओंका अमली पहलू रखनेका सबसे अच्छा साधन साबित होगा। अिस तरह सर्वोदय समाजकी स्थापना, जैसा कि ठहरावमें कहा गया है, सत्य और अहिंसापर खड़े होनेवाले समाजकी रचनाके लिअे की गअी है, जिसमें जात-पाँत या धर्मका कोअी फरक नहीं होगा, किसीके शोषणकी थोड़ी भी गुंजाअिश नहीं होगी, और व्यक्तियों और समाजके विकासके लिअे पूरा मौका मिलेगा। ठहरावमें अिस मकसदको हासिल करनेके विभिन्न साधन बताये गये हैं, जो रचनात्मक कार्यक्रमके विभिन्न पहलू हैं। ठहरावमें यह बताया गया है कि जो गांधीजीके सिद्धान्तोंको दृढ़तासे मानता है और जीवनमें अुनपर अमल करता है, वह सर्वोदय समाजका मेम्बर हो सकता है।

सालाना मेला

मेम्बरोंको आपसमें सम्पर्क कायम करनेका मौका देनेके लिअे यह तय किया गया कि किसी तय की हुअी जगहपर हर साल ३० जनवरीको मेला हुआ करेगा। यह मेला आजकलकी कान्फरेन्सों या कांग्रेसोंसे बिलकुल अलग होगा, जिनके लिअे स्वागत-समितियोंको प्रतिनिधियोंके रहने-खानेके लिअे बड़े पैमानेपर खर्चीला अिन्तजाम करना पड़ता है। यह मेला निश्चित तारीखको अेक निश्चित जगहपर होगा; और जो अुसमें आयेंगे, अुन्हें अपना अिन्तजाम अुसी तरह खुद करना होगा, जिस तरह किसी मेलेमें जानेवाले लोग करते हैं। अिस मेलेमें आनेवाले लोगोंके लिअे दूसरे लोग सिर्फ सफाअी वगैराका ही अिन्तजाम कर सकते हैं, जो व्यक्तियोंसे नहीं हो सकता। सेवक अिस मेलेमें अेक-दूसरेसे मिलेंगे, विचारोंका लेन-देन करेंगे, अेक-दूसरेके अनुभव जानेंगे और ताजी प्रेरणा लेकर अपनी अपनी कामकी जगहोंपर लौट जायेंगे। संभव है, पत्र भी प्रकाशित किये जायँ, जिनसे मेम्बरोंको अेक-दूसरेके विचारों और अनुभवोंको जाननेका फायदा मिले।

कमेटी और अुसका काम

प्रेसिडेण्ट और श्री किशोरलाल मशरूवालाको यह अधिकार दिया गया कि वे अिस ठहरावको अमलमें लानेके लिअे अेक कमेटी बनावें। कान्फरेन्समें यह बात खास तौरपर कही गअी कि अिस कमेटीका अैसा रूप नहीं होना चाहिये, जो गांधीजीकी शिक्षाओंका अधिकृत अर्थ बतावे या अुस कोटेका काम करे जहाँ गांधीजीकी शिक्षाओंके अर्थपर खड़े होनेवाले झगड़ोंका फैसला किया जाय। कमेटी समाजका अैसा संगठन भी न करे कि वह राजनीतिक या दूसरे मकसद हासिल करनेवाली पार्टी बन जाय; और न अुसे धार्मिक सम्प्रदाय जैसा कोअी रूप दिया जाय। अेक रायसे यह मंजूर किया गया कि न तो समाज और न यह कमेटी अैसी कोअी बात करेगी। कमेटीका काम होगा: सेवकोंका अेक रजिस्टर रखना, सालाना मेलेके लिअे जरूरी अिन्तजाम करना और सारे देशमें फैले हुअे मेम्बरोंको अेक सूत्रमें बाँधनेका काम करना। कमेटी बनानेमें अैसे कार्यकर्ता चुननेका ध्यान रखा गया है, जो किसी न किसी तरहके रचनात्मक काममें भाग ले रहे हैं और अुस तरहका जीवन जीनेकी कोशिश करते रहे हैं जैसा गांधीजी हमारे लिअे पसन्द करते, जिन्होंने अपने आपको पीछे रखकर काम किया है, जो अभी तक प्रकाशमें नहीं आये हैं, जो संयोगसे बड़े नहीं बन गये, और लोग जिनकी बात वहीं तक मानेंगे जहाँ तक वे अपने विश्वासपर अमल करेंगे।

सर्वोदय समाज

सर्वोदय समाज अेक संस्थाकी तरह काम नहीं करेगा। वह खुद कोअी काम या प्रोग्राम अपने हाथमें नहीं लेगा, हालाँ कि

www.vinoba.in

सब सेवकोंसे यह आशा रखी जायगी कि वे किसी रचनात्मक कामको आगे बढ़ानेके लिअे कुछ न कुछ करते रहें । हर सेवकको अपनी योग्यताके अनुसार काम करनेकी आज़ादी रहेगी — बेशक अुसका मेल गांधीजीकी शिक्षाओंसे बैठना चाहिये । लेकिन वह कोअी काम समाजके नामपर या समाजके लिअे नहीं करेगा । आशा की जाती है कि जो स्त्री-पुरुष श्रद्धा और अिच्छा रखते हैं, वे अिस समाजमें शामिल होंगे और आज़ादीसे खुद होकर, बिना किसी डर या तरफदारीके, गांधीजीकी शिक्षाओंपर अपने जीवनमें अमल करेंगे । सारी दुनियामें अैसे लोगोंकी तादाद बहुत बड़ी होनी चाहिये और यह आशा है कि समाज अपने मेम्बरोंके मारफत गांधीजीकी शिक्षाकी जोतको जलती ही नहीं रख सकेगा, बल्कि अुसके प्रकाशको ज्यादा ज्यादा दूर तक फैला सकेगा ।

तामीरी संस्थाओंका आपसी सहयोग

दूसरी बात, जिसपर विचार करना था, वह यह थी कि अखिल भारत-चरखा-संघ, ग्रामोद्योग-संघ, हिन्दुस्तानी तालीमी-संघ, गोसेवा-संघ, हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा वगैरा जैसी तामीरी काममें लगी हुअी संस्थाओंका आपसमें सहयोग कैसे साधा जाय । अिन भिन्न भिन्न संस्थाओंको गांधीजीने अलग अलग मौकोंपर कांग्रेसके तत्वावधानमें और अुसके आशीर्वादसे शुरू किया था और वे जिन खास कामोंसे सम्बन्धित हैं, अुन्हें पूरी तरहसे कर रही हैं । अैसे कअी कार्यकर्ता हैं, जो अिनमेंसे अेकसे ज्यादा संस्थाओंमें अेक साथ रुचि लेते हैं । गांधीजी भी महसूस करते थे कि अैसा कुछ किया जाय, जिससे ये संस्थाअें अेक-दूसरीके नजदीक आ सकें और आपसमें सहयोग कर सकें, ताकि वे अेक-दूसरीके लिअे मददगार हो सकें । अपने जीवनकालमें गांधीजी अिनमेंसे कुछके सभापति थे, और जहाँ वे सभापति नहीं थे, वहाँ भी अिनमेंसे हरअेककी रहनुमाअी और संचालन करते थे । गांधीजीके अवसानके बाद अिन संस्थाओंका आपसमें सहयोग कायम करना, और जिस तरह गांधीजी अिनका संचालन और रहनुमाअी करते थे, वैसा करनेके लिअे कुछ व्यक्ति मुकर्रर करना या कोअी संस्था कायम करना और भी ज्यादा जरूरी है । अिसपर सम्मेलन कोअी फैसला न कर सका, क्योंकि अिनमेंसे हरअेक संस्था स्वतंत्र थी । अिसलिअे सम्मेलन अैसा कोअी फैसला नहीं दे सका, जो अुनपर बन्धनकारक हो । जो सदस्य सचमुच अिन संस्थाओंकी नुमाअिन्दगी करते थे, वे सब अैसी अेक संस्था कायम करनेके लिअे अुत्सुक थे । अिसलिअे तय किया गया कि यह काम श्री जे० सी० कुमारप्पाके सिपुर्द किया जाय, जो अिन संस्थाओंकी सलाहसे जरूरी कदम अुठावें और अिस कामको पूरा करें ।

चूँकि रचनात्मक कार्यक्रम हमेशा बढ़ता जानेवाला कार्यक्रम है, अिसलिअे अिसके लिअे जरूरी संस्थाओंकी तादादकी कोअी सीमा नहीं है । अिसलिअे जो सहयोगी संस्था कायम की जायगी, वह न सिर्फ मौजूदा संस्थाओंसे ही सम्बन्ध रखेगी, बल्कि बादमें बननेवाली संस्थाओंके लिअे भी प्रबन्ध करेगी ।

फिरकेवाराना शान्ति — अेकमात्र फर्ज़

अिन दो बातोंपर विचार करनेमें सम्मेलनने बहुत वक़्त लगाया । मगर अपनी सारी चर्चाओंके दौरानमें और जितने समय सदस्य वहाँ हाजिर रहे, अुतने पूरे समय तक सभी अिस बातको महसूस कर रहे थे कि जिस फिरकेवाराना शान्तिके लिअे गांधीजी अपने आखिरी दिनोंमें करीब करीब अपना पूरा समय दे रहे थे और जिसके परिणाम स्वरूप अुन्होंने अपनी जान दी, अुसे कायम करनेके लिअे कुछ करना बहुत जरूरी है । हमारे यहाँ फिरकेवाराना सवाल लम्बे अरसेसे रहा है और गांधीजीने जिन्दगी भर अपने कामोंमें अुसे बहुत अूँचा स्थान दिया था । मगर बदकिस्मतीसे, अुनकी कोशिशोंके बावजूद यह सवाल ज्यादा ज्यादा अुलझता गया है और कुछ गिरोहोंने अुनके काम और अुनके अिरादे तक पर शक किया है । हिन्दू-मुस्लिमका आपसी तनाव, जिसके परिणाम स्वरूप देशका बँटवारा हुआ है और जिससे दो अलग अलग राज्य कायम हुअे हैं, पिछले महीनोंमें बहुत ज्यादा बढ़ गया है । यहाँ अुसके अितिहासमें जानेकी जरूरत नहीं है ।

बँटवारेके परिणाम

देशका बँटवारा होनेके थोड़े पहले और बादमें देशवासियोंको बेहद मुसीबतें अुठानी पड़ी हैं । हजारों मर्दों, औरतों और बच्चोंने भी अपनी जानें खोअीं, और लूटमार और आग लगानेमें करोड़ोंकी सम्पत्ति खोअी गअी और बरबाद हुअी है । अेक तरफ करोड़ों हिन्दू और सिक्ख और दूसरी तरफ मुसलमान बेहद मुसीबतों और तकलीफोंके बीच अपने अपने घर छोड़कर क्रमशः पूर्वी पंजाब या हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंमें आये और पाकिस्तानको गये हैं । यह हलचल अभी खत्म नहीं हुअी है । लाखों हिन्दू और कुछ सिक्ख पश्चिम पाकिस्तानमें छूट गये हैं और हिन्दुस्तान रवाना होनेका अिन्तजार कर रहे हैं । जितने लोग पश्चिम पाकिस्तानसे हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानसे पश्चिम पाकिस्तान गये हैं, अुनकी तादाद दोनों तरफ लगभग पचास लाख कूती जाती है । अिसी तरह कहा जाता है कि सात या आठ लाख हिन्दू पूर्व पाकिस्तान छोड़कर पश्चिम बंगालमें चले आये हैं । लोगोंके अितनी बड़ी तादादमें अपने घर पूरी तरह छोड़कर सैकड़ों मील दूर जानेमें कितनी मुसीबत समाअी हुअी है, अिसका अच्छी तरह अन्दाज लगाया जा सकता है । अिसलिअे अुन लोगोंके दिलोंमें गुस्सा और कड़ुआहट होना अस्वाभाविक नहीं है । अपने धर्म-भाअियोंकी मुसीबतोंकी खबरोंने मुसलमानों और गैरमुस्लिमों दोनोंके दिल खट्टे कर दिये हैं । अिन घटनाओंके साथ देशके बँटवारेने, फिरकेवाराना समस्याको हल करनेके बजाय अुसे अेक भिन्न दिशामें मोड़ दे दिया है और कुछ बातोंमें अुसे बढ़ा भी दिया है ।

गांधीजीका रास्ता

ये कड़ुवी भावनाअें ही थीं, जिन्हें दूर करनेमें गांधीजीने अपने महान व्यक्तित्वकी पूरी ताकत लगा दी थी और आखिरी महीनोंमें अुनका अेक अेक मिनिट हिन्दुओं और मुसलमानोंमें भाअीचारेका सम्बन्ध स्थापित करनेमें बीता था । वे बेहद अुलझी हुअी सामाजिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओंको अपने अनोखे और कभी नाकाम न होनेवाले अहिंसाके अुसूलसे हल करनेकी कोशिश कर रहे थे । अुनका विश्वास था और वे अडिग दृढ़ताके साथ अिस बातका अुपदेश देते थे कि अगर हिन्दुस्तानके हिन्दू, सिक्ख और दूसरे लोग मुसलमानोंकी हिफाजतकी गारण्टी दे सकें और अुनमें विश्वास पैदा कर सकें, तो पाकिस्तानके मुसलमानोंके लिअे अिसके सिवा और कोअी चारा नहीं रह जायगा कि वे भी अपने यहाँ हिन्दुओं और सिक्खोंके साथ वैसा ही बरताव करें । अिसलिअे वे अिसपर जोर देते थे कि हम अिस बातकी परवाह किये बगैर कि पाकिस्तानमें क्या हो रहा है, हिन्दुस्तानके मुसलमानोंके साथ अपने भाअियों-जैसा अच्छा बरताव करें । अेक बुरे कामका बदला लेनेके लिअे दूसरा बुरा काम करना ठीक नहीं; अच्छा काम अपने आपमें सही और अुचित है, और अुसके लिअे यह जरूरी नहीं कि सामनेवाला पक्ष भी अच्छा काम करे । हमें बुराअीका बदला भलाअीसे ही देना चाहिये । गांधीजीके अिस आग्रहने ही कुछ लोगोंको अुनसे दूर कर दिया और अुनका विरोधी बना दिया । और देशमें अविश्वास और नफरतका जो वातावरण पैदा किया गया, अुसमें अेक आदमीके लिअे यह संभव हो सका कि अुसने गांधीजीके खूनके बारेमें सोचा और अुनका खून कर दिया ।

जहरको जड़से मिटाअिये

कान्फरेन्सने यह महसूस किया कि आजकी सबसे बड़ी समस्या यह है कि हमारे सामाजिक जीवनसे अिस जहरको जड़से मिटाया जाय । अपने अपने कार्यक्षेत्रोंमें और अपने जीवनमें मन, वचन, कर्मसे लगे हुअे श्रद्धा और सद्भावनावाले स्त्री-पुरुष यह काम पूरा कर सकते हैं । अिसलिअे यह कान्फरेन्स अनुरोध करती है कि जो

www.vinoba.in

लोग गांधीजीके सिद्धान्तोंमें श्रद्धा रखते हैं और अुनकी शिक्षाओंके अनुसार काम करनेका दावा करते हैं, वे सब अिस कामको सबसे जरूरी समझें और अुसमें अपने आपको लगा दें ।

शरणार्थियोंको फिर बसाना

कान्फरेन्सने यह भी महसूस किया कि जब तक देशमें लाखों अैसे स्त्री-पुरुष हैं जिन्हें बयान न किये जा सकनेवाले अत्याचारों और असह्य दुःखोंकी कड़वी यादें सता रही हों, और जबतक अुन्हें फिरसे बसानेका सन्तोष-जनक प्रबन्ध नहीं किया जाता, तब तक हमारे साम्प्रदायिक क्षेत्रमें फिरसे समझ और विवेक पैदा करना सबसे मुश्किल काम है । अिसलिअे यह जरूरी है कि बाहरसे आनेवाले सारे शरणार्थियों और दुःखियोंकी, जाति और धर्मका भेद छोड़कर सेवा की जाय । अुनकी राहत और अुनको फिरसे बसानेका सवाल अितना बड़ा और अितना मुश्किल है कि कोअी गैर-सरकारी संस्था अुसे हाथमें लेकर पूरा नहीं कर सकती । सरकारको भी, दिली अिच्छा और बड़े-बड़े साधनोंके होते हुअे यह काम सबसे मुश्किल मालूम हुआ है । वह अिसके लिअे जी-तोड़ कोशिश कर रही है और अपने सारे साधनोंको अिस काममें लगा रही है । लेकिन गैर-सरकारी संस्थाअें और व्यक्ति सरकार और अुसके अफसरोंको मदद दे सकते हैं । अिसलिअे कान्फरेन्समें मौजूद कार्यकर्ताओंसे अपील की गअी कि वे बाहरसे आनेवाले दुःखी लोगोंकी सेवाका काम हाथमें लें । यह सन्तोषकी बात है कि अिस अपीलके फलस्वरूप श्री विनोबा भावे अनुभवी और परखे हुअे कार्यकर्ताओंके अेक दलके साथ राहतके सवालका अध्ययन करनेके लिअे जा रहे हैं । वे यह देखेंगे कि कहाँ और किस तरह रचनात्मक कार्यकर्ता अिस दिशामें अुपयोगी सेवा कर सकते हैं ।

शान्ति-दल

गांधीजी लम्बे समयसे कार्यकर्ताओंका अेक अैसा दल खड़ा करनेकी संभावना और औचित्यपर विचार कर रहे थे, जो अपने आपको पूरी तरह जनतामें शान्ति बनाये रखनेके काममें ही लगा दे । अुन्होंने कअी बार 'शान्ति-सेना'का सुझाव रखा था । लेकिन किसी न किसी कारणसे यह काम अुनके जीते जी पूरा नहीं हो सका । अगर साम्प्रदायिक तंगदिलीको मिटाना है, तो अिस तरहकी कोअी संस्था बड़ी मददगार साबित होगी । अिसलिअे कान्फरेन्समें यह तय किया गया कि 'शान्ति-सेवादलों'को संगठित करनेकी कोशिश करनी चाहिये । यह बात साफ तौरपर समझ लेनी चाहिये कि शान्ति-सेवादल पुलिस या स्वयंसेवकोंका संगठन नहीं है, जिसका काम दंगोंको दबाना हो सकता है । 'सेवा-दल'का काम होगा कि वह जनतामें लगातार काम करके शान्ति और सद्भावनाका वातावरण पैदा करे, जिससे साम्प्रदायिक दंगा-फिसाद बिलकुल न हो । और अगर बदकिस्मतीसे वह हो ही जाय, तो सेवा-दल अपने आपको लड़नेवाले लोगोंके बीच झोंक दे और झगड़ेको रोके या कम से कम अुसकी तेजीको कम करे । सेवा-दलके पास कोअी हथियार न होंगे और वह पूरी तरह अहिंसक होगा । अिसलिअे वह यह काम कर सकेगा ।

(अंग्रेजीसे)

राजेन्द्रप्रसाद

ग्राहकोंसे

ग्राहक लोग जानते हैं कि किन हालतोंमें 'हरिजन' पत्रोंका प्रकाशन कुछ समयके लिअे मुल्तवी किया गया था । अब यह तय किया गया है कि जिस तारीखको यह अंक ग्राहकोंको मिलेगा, अुसी तारीखसे 'हरिजन' पत्रोंका पुनः प्रकाशन चालू किया जाय ।

जितने समय तक पत्रोंका प्रकाशन मुल्तवी रहा, अुसकी कमी पूरी करनेके लिअे हमने यह तय किया है कि ग्राहकोंके चन्देकी अवधि अेक महीना आगे बढ़ा दी जाय । अिस तरह अब यह माना जायगा कि जो चन्दा फरवरी, १९४९ के आखिरमें खतम होनेवाला है, वह मार्च, १९४९ के आखिरमें खतम होगा । अिसी तरह दूसरे महीनोंमें खतम होनेवाले चन्देके बारेमें भी समझना चाहिये ।

१-४-'४८

जी० देसाअी

राष्ट्रीय सप्ताह

कांग्रेस प्रेसिडेण्ट डॉ० राजेन्द्रप्रसादने आगामी राष्ट्रीय सप्ताह मनानेके बारेमें नीचे लिखी अपील निकाली है :

हमारा देश लगभग ३० बरससे हरसाल ६ से १३ अप्रैल तक राष्ट्रीय सप्ताह मनाता आ रहा है । अिसी सप्ताहमें महात्मा गांधीने अिस देशके लोगोंके आत्म-सम्मान और हकोंके लिअे और आज़ादी हासिल करनेके लिअे देशभरमें बड़े पैमानेपर आन्दोलन शुरू किया था । आज़ादी हासिल करनेके पहले हमें अुनके नेतृत्वमें कअी सत्याग्रह आन्दोलनोंसे गुजरना पड़ा था । जब हम सत्याग्रहमें नहीं लगे होते थे, तब अिस सप्ताहका अुपयोग रचनात्मक कार्यक्रमकी अेक या दूसरी बातको जोरोंसे आगे बढ़ानेके काममें किया जाता था । लेकिन अब अिस सप्ताहका अेक खास और अलग महत्त्व है । अब यह सप्ताह याददाश्त और रचनात्मक कामोंमें अपने आपको फिरसे लगा देनेका सप्ताह होना चाहिये । महात्माजीके अवसानसे अिसे मनानेका महत्त्व और ज्यादा बढ़ जाता है । अिसीलिअे अिसे गंभीरता, पवित्रता, लेकिन अुत्साहके साथ मनाना होगा । कांग्रेसकी सारी संस्थाओं और दूसरे लोगोंसे मेरी यह बिनती है कि अिस साल वे अिस सप्ताहमें पूरी लगनके साथ दो बातें करें । सारे देशमें फिरसे साम्प्रदायिक शान्ति और मेल-मिलाप कायम करनेके लिअे आन्दोलन किया जाय । यह काम अलग अलग जातियोंके मेम्बरों — खासकर हिन्दू, मुसलमान, और सिक्खों — में प्रचार और भाअीचारेके जरिये और स्थानीय शिकायतोंके गड़बड़ी पैदा करनेवाले कारणोंको दूर करके किया जा सकता है ।

अिस सप्ताहमें गांधी-राष्ट्रीय-स्मारक-फण्डके लिअे पैसा भी अिकट्ठा किया जाना चाहिये । केन्द्रीय समितिने प्रान्तोंमें और देशी राज्योंमें कमेटियाँ बना दी हैं । आशा की जाती है कि राष्ट्रीय सप्ताहके शुरू होनेसे पहले वे जहाँ जरूरी होगा वहाँ पैसा अिकट्ठा करनेके लिअे स्थानीय कमेटियाँ और अधिकृत अेजण्ट कायम कर देंगी । केन्द्रीय समितिने सबसे यह अपील की है कि वे कमसे कम अपनी १० दिनकी कमाअी फण्डमें दें । सारे देशमें लोगोंके पास जाकर फण्डके लिअे पैसा अिकट्ठा करनेके लिअे कदम अुठाये जाने चाहियें । जिन लोगोंको फण्डके लिअे पैसा अिकट्ठा करनेका अधिकार मिला हुआ है, अुन्हींको रसीद पानेपर ही पैसा देना चाहिये । फण्ड अिकट्ठा करनेवाले अेजण्टों और कमेटियोंको चाहिये कि वे अिकट्ठी की हुअी रकम रोज रोज अैसे बैंकोंमें जमा करा दें, जिन्हें जमा करनेका अधिकार दिया गया है और जिनका नाम जाहिर कर दिया गया है । यह डर है कि फण्डके लिअे पैसा अिकट्ठा करनेवाले कार्यकर्ता राष्ट्रीय सप्ताहमें पैसा देनेकी अिच्छा रखनेवाले सब लोगोंके पास न पहुँच सकें । अिसलिअे सम्भव है यह समय बढ़ा दिया जाय और हमें जोरोंसे काम करनेके लिअे राष्ट्रीय सप्ताहके बजाय राष्ट्रीय पखवारेका समय मिले । बेशक, फण्डके लिअे पैसा अिकट्ठा करनेका काम अितने समयमें खतम नहीं होगा । लेकिन यह आशा की जाती है कि राष्ट्रीय सप्ताहमें अिस कामकी अच्छी शुरूआत हो जायगी ।

(अंग्रेजीसे)

विषय-सूची

		पृष्ठ
हिम्मतभरा निर्णय	... वल्लभभाअी पटेल	५३
पहली जरूरत	... मंगलदास पक्कासा	५३
अल्पसंख्यक जातियोंके बारेमें नीति	... कि० घ० मशरूवाला	५३
सेवाग्राम-सम्मेलनके ठहराव		५४
प्रेम-पंथ	... गांधीजी	५५
भगवान भरोसे	... कि० घ० मशरूवाला	५६
सेवाग्राम-सम्मेलन	... राजेन्द्रप्रसाद	५६
राष्ट्रीय सप्ताह	... राजेन्द्रप्रसाद	६०

www.vinoba.in